Siddharoodha Swami

Siddharoodha Swami, a luminary in the realm of spiritual humanism, graced our sacred land of India, often likened to the pinnacle of spiritual enlightenment. India, a tapestry of diverse cultures and beliefs, cherishes the principle of unity in diversity, where reverence for the teachings of various spiritual leaders unites people across strata. In this fertile soil of spiritual wisdom, Siddharoodha Swami's presence was akin to a fragrant flower spreading its divine essence far and wide.

Born to Gurushantappa and Devamallamma in the village of Chalakapur, Siddharoodha Swami embarked on his spiritual journey from a tender age. His quest led him to the revered Amareshwar Guru Gajadand Shivayogi, where he imbibed the essence of Advaita philosophy. He served him in four fold ways-intimate, body, place and good-will. He gained Guru's Grace for having informed Subbayya Shastri about the features of Brahman. Gajadanda Swami blessed him by saying that he was not ordinary and he had come as Lord Shiva to uplift the devotees. He also told him that he had incarnated to show the right path to the mumukshus (intense seekers). He ordered him to begin his life-work of preaching advaita as Shree Siddharoodha Bharati. In return, Shree Siddharooha gave his Ishta-linga to his Guru as Guru dakshine. One, who has transcended the three ordinary states (waking, dream and deep sleep) and crossed the six enemies - desire, anger, fear, greed, arrogance and jealousy does not need linga saying thus to his Guru and taking his permission, he began his sojourns.

Blessed by his Guru, Siddharoodha Swami devoted his life to the upliftment of seekers, traversing the length and breadth of the country to disseminate his message of universal love and harmony. People, who were afflicted with sorrows and heavily loaded with the miseries of the worldly existence, took his darshan. Lakhs of people became his followers. Siddharoodha's divine-lamp enlightened in the hearts of his devotees. Wherever Shree Siddharoodha went, there he made wonderful miracles.

Sadguru Siddharoodha Swami was a Great Saint, Philosopher, socio-religious revolutionary and who preached Universal Religion-Social Humanistic Philosophy, Peace and Harmony in Mankind. His mission was practical Adviata and vision was Spiritual Humanism. He finally came to Hubballi which is the home-town of the saints and sages. Shree Siddharoodha lived at the Dumageri stone platform in Hubballi, he preached Sri Nijaguna's Shastra, the Bhagavad-Gita, the Upanishads, the Panchadashi and secret of the Brahma-Sootras. His teachings, rooted in the Upanishads & Bhagavad Gita, emphasized the omnipresence of divine light within every being, urging them to shed the veil of material attachment and realize their inherent divinity.

A beacon of socio-religious reform, Siddharoodha Swami actively participated in the freedom movement, hosting conferences at his ashram attended by luminaries like Lokmanya Tilak and Mahatma Gandhi as the Chief Guests in the year 1922 and 1924 respectively. His spiritual prowess attracted the attention of revered saints and mystics of his time, engaging in profound dialogues that enriched the spiritual landscape of the era.

Though he departed from his mortal coil, Siddharoodha Swami's presence continues to resonate in the hearts of devotees. His samadhi at Hubballi remains a sanctuary of spiritual solace, where seekers from across the globe converge to seek his divine blessings. The Siddharoodha Math, overseen by a dedicated trust, serves as a bastion of Advaita philosophy, fostering communal harmony and humanitarian service. Siddharoodha Math Trust is a public trust functioning under the Principal District Judge.

Every year, during Ramnavami, Shivaratri, Shravana, Gurunatharoodha Punyaradhane religious programmes are held at Siddharoodha Math. During the Shivaratri Rathotsava around 5-6 lakhs of devotees, irrespective of Caste, Color or Creed, congregate and celebrate in a grand manner making it attain national and international fame.

Besides, Nirantar Anna-dasoha (Serving food to thousands of visiting pilgrims/devotees) and Gyandasoha (imparting knowledge) are the daily routine activities in the Math premises. Every Monday, there will be more than 10,000-15,000 devotees coming to the Math for Darshan to worship and seek divine blessings. Siddharoodha Math has been seen as a symbol of communal harmony & love for mankind.

In acknowledgment of Siddharoodha Swami's profound contributions to India's spiritual tapestry, the Department of Posts proudly unveils a commemorative postage stamp, honoring him as a guiding light in the realm of Indian spirituality.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh Suresh Kumar
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

सिद्धारूढ स्वामी
SIDDHAROODHA SWAMI

विवरणिका BROCHURE

सिद्धारुढ स्वामी

आध्यात्मिक प्रबोधन का शिखर माने जाने वाली हमारी पुण्य भारत भूमि को सुशोभित करने वाले सिद्धारुढ स्वामी आध्यात्मिक मानवतावाद के क्षेत्र में सुविख्यात हैं। अनेकता में एकता के सिद्धांत का अनुसरण करने वाले इस देश में विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के लोग रहते हैं तथा विभिन्न आध्यात्मिक गुरुओं की शिक्षाएं इन सभी वर्गों के लोगों को एकता के सूत्र में पिरोए रखती हैं। आध्यात्मिक ज्ञान की इस समृद्ध धरा में, सिद्धारुढ स्वामी एक ऐसे पुष्प की तरह पल्लवित हुए, जिनकी आलौकिक सुवास दूर–दूर तक फैली।

चलकपुर गांव में गुरुशान्तप्पा और देवमल्लम्मा के घर जन्मे सिद्धारुढ स्वामी बहुत छोटी उम्र से ही आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर हो गए थे। आध्यात्म की तलाश उन्हें पूज्य अमरेश्वर गजदण्ड शिवयोगी की शरण में ले गई, जहां उन्होंने अद्वैत दर्शन के सार को आत्मसात किया। उन्होंने अपने गुरु की चारों प्रकार अर्थात् मन, काया, स्थान और सद्भाव से सेवा की। उन्होंने सुब्बय्या शास्त्री को ब्राह्मण की विशेषताओं के बारे में ज्ञान देकर गुरु कृपा प्राप्त की। गजदण्ड स्वामी ने उन्हें यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि वे कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं बल्कि साक्षात शिव के रूप में भक्तों के उत्थान के लिए प्रकट हुए हैं। गुरु जी ने उन्हें यह भी बताया कि वे मुमुक्षुओं को सही मार्ग दिखाने के लिए अवतरित हुए हैं। उन्होंने उन्हें सिद्धारुढ भारती के रूप में आजीवन अद्वैत की शिक्षाओं के प्रचार–प्रसार का कार्य आरंभ करने का आदेश दिया। इस पर श्री सिद्धारुढ ने गुरुदक्षिणा स्वरूप अपना इष्ट–लिंग गुरुजी को भेंट किया और उनसे यह कहते हुए आज्ञा लेकर अपनी यात्रा आरंभ की कि वह व्यक्ति जिसने तीन सामान्य अवस्थाओं (चेतनावस्था, स्वप्नावस्था और निद्रावस्था) को पार कर लिया हो और छः शत्रुओं – इच्छा, क्रोध, भय, लालच, दर्प तथा ईर्ष्या पर विजय प्राप्त कर ली हो उसे लिंग की आवश्यकता नहीं है।

अपने गुरु से आशीर्वाद प्राप्त कर श्री सिद्धारुढ स्वामी ने अपना समस्त जीवन सार्वभौमिक प्रेम और सद्भाव के संदेश का प्रचार–प्रसार करने हेतु देशभर की यात्रा करते हुए मुमुक्षुओं के उत्थान हेतु समर्पित कर दिया। सांसारिक दुःखों और कष्टों के भार से पीडित लाखों लोग उनके संसर्ग में आए और उनके अनुयायी बन गए। श्री सिद्धारुढ स्वामी की अलौकिक ज्योति ने उनके अनुयायियों के हृदयों को प्रकाशित किया, वे जहां भी गए, वहाँ उन्होंने अपने चमत्कार दिखाए।

सद्गुरु सिद्धारुढ स्वामी एक महान संत, दार्शनिक एवं सामाजिक–धार्मिक परिवर्तनकारी महापुरुष थे। उन्होंने सार्वभौमिक धार्मिक–सामाजिक मानवतावादी दर्शन, शांति और मानव जाति के बीच आपसी सद्भाव का संदेश दिया। उनका मिशन – व्यावहारिक अद्वैत और विजन – आध्यात्मिक मानवतावाद को आगे बढ़ाने का था। बाद में, वे संतों और महात्माओं का गृह–नगर कहलाने वाले हुब्बली में आ बसे, जहां वे दूमागिरी नामक शिला पर रहने लगे। उन्होंने श्री निजगुण शास्त्र, भगवद्–गीता, उपनिषदों, पंचदशी और ब्रह्म–सूत्रों के रहस्य से संबंधित प्रवचन दिए। उपनिषदों और भगवद्गीता पर आधारित उनकी शिक्षाओं में इस बात पर बल दिया गया है कि जीवमात्र के भीतर आलौकिक प्रकाश मौजूद है। उन्होंने यह आग्रह भी किया कि हमें सांसारिक मोह त्यागकर अपने भीतर विराजमान प्रकाश का अनुभव करना चाहिए।

धार्मिक–सामाजिक सुधारों के अग्रदूत, सिद्धारुढ स्वामी ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। वर्ष 1922 और 1924 में, उन्होंने अपने आश्रम में सम्मेलन आयोजित किए, जिसमें लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी जैसी सुविख्यात हस्तियां मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उनकी आध्यात्मिक ख्याति ने उस समय के प्रख्यात संतों और रहस्यवादियों को उनकी ओर आकर्षित किया और इनके बीच हुए गहन विमर्श ने उस कालखंड के आध्यात्मिक परिदृश्य को और भी समृद्ध किया।

हालांकि श्री सिद्धारुढ स्वामी अपने नश्वर शरीर को त्याग चुके हैं पर, वे अपने भक्तों के हृदय में आज भी विराजमान हैं। हुब्बली स्थित उनकी समाधि, आध्यात्मिक शान्ति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभरी है, जहां विश्वभर से मुमुक्षु उनका दिव्य आध्यात्मिक आशीष प्राप्त करने हेतु एकत्र होते हैं। सिद्धारुढ मठ का रख–रखाव एक समर्पित न्यास द्वारा किया जाता है। यह मठ सांप्रदायिक सद्भाव और मानव सेवा को बढ़ावा देते हुए अद्वैत दर्शन के केन्द्र के रूप कार्य कर रहा है। सिद्धारुढ न्यास एक सार्वजनिक न्यास है, जो प्रधान जिला न्यायाधीश के अधीन कार्य करता है।

प्रत्येक वर्ष रामनवमी, शिवरात्रि, श्रावण मास तथा गुरूनाथरूढ़ पुण्याराधने के दौरान सिद्धारुढ मठ में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। शिवरात्रि रथोत्सव के दौरान विभिन्न जाति, वर्ण अथवा पंथ के लगभग 5–6 लाख श्रद्धालु यहां एकत्र होते हैं और दिव्य–भव्य तरीके से उत्सव मनाते हैं, जोकि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है। निरंतर अन्न–दासोह (हजारों अतिथि तीर्थ यात्रियों/श्रद्धालुओं को भोजन परोसना) और ज्ञान–दासोह (ज्ञान प्रदान करना) के अलावा, मठ परिसर में अनेक गतिविधियां भी आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक सोमवार को दस–पंद्रह हजार से भी अधिक श्रद्धालु दर्शन–पूजन करने और आशीर्वाद प्राप्त करने इस मठ में आते हैं। सिद्धारुढ मठ को सांप्रदायिक सद्भाव और मानवमात्र के लिए प्रेम का प्रतीक माना जाता है।

डाक विभाग, भारत के आध्यात्मिक ताने–बाने में सिद्धारुढ स्वामी के महत्वपूर्ण योगदान तथा भारतीय आध्यात्म के क्षेत्र में मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हुए उनके सम्मान में एक स्मारक डाक–टिकट जारी कर गर्व का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे पाठ : श्री सुरेश कुमार

: प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	: 06.07.2024
Date of Release	: 06.07.2024
मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 302650
Stamps Printed	: 302650
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00